



लोक-परलोक



लोक-परलोक

लेखक के अन्य उपन्यास

एक नोट द्वा पक्षी

नया माड

सागर, नहर और मनुष्य

# लोक-परलोक

(पश्चिमी उत्तर प्रदेश के तीर्थ ग्राम  
का एक ममयुगीन जीवन-चित्र)

उदयशंकर भट्ट



**राजकमल प्रकाशन**

दिल्ली वरन्धे इलाहाबाद पटना मद्रास

© उत्पलशर्मा, १९५८

प्रथम संस्करण, १९५८

मूल्य तीन रुपये पचास नये पैसे

प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड  
दिल्ली ।

मद्रक

श्री गोपीनाथ सेठ  
नवीन प्रस दिल्ली ।

सप्त दिन मयूर से ही टीले पर इनकी रौनक और चहल-पहल थी  
 कि झुंड के झुंड स्त्री-मुग्ध, बालक-बूटे, पास ही गंगा-स्नान करके  
 'जय दवी की' 'नर माता की', 'जय कटराणी की', 'जय-जय कहत  
 ऊपर चढ़ रहे थे। बच्चा पर रस्सी बामा की लाठिया पर घाती मुन्नात,  
 जो धोनिया और नंग पैर घुन्ना तक चले धानी, मले कुरल या  
 बनी पहन चले आ रहे थे। बगल में, बच्चा पर पाटली गवे, पोची,  
 लाल काला गाँठ लग छाट के लहंगे वैसी ही रंग बिरंगी आदमी आद,  
 हाथा में लाल हरी चूड़िया, पट्टेनी, छलन कड़े, गले में हंसरी कठी  
 रंग बिरंग नकली मातियों, मूँगा की मात्ताएँ पहन औरता के झुंड  
 टीले पर दिशाई दे रहे थे। सड़के सड़कते बूटे लकड़ी टकत, जवान  
 उमगा में भरे मन में कामनाएँ लिय काड बतार में कोई फले, बिखर  
 आत जा रहे थे। किमी के सिर पर मली टोपी काई नंग मिर कोई  
 पगड़ी बांधे खसाराते, हिंसने सासा में मनोनी भर हुए थे। ऊपर टीले  
 पर कटराणी दवी के मंदिर के सामने तम्र विछाय सिरकिया या छुने  
 चबूतरा पर पूजा की सामग्री बचन बाला की दुकानें लगी थी।  
 शाल ही बनेर, गेंदा, सत्तबहार के फूल टोकरियो में बचे जा रहे थे।  
 दुकानदार और फूल बचने वाली औरतें चित्ता चित्ताकर अपने सामान  
 की धावाजें लगा रहे थे। पूजा की सामग्री में बताखे, पोने नारियल,  
 लाल कपड़े के चीयड़े कीडो, घूप, दीप और गहना में टीन के टुकड़ा  
 के हार थे। पांच आन से लेकर सत्ता रुपय तक का सामान ! अमली



मन्दिर और बाहर के छोटे मन्दिरों में घंटे बज रहे थे। भक्तों में  
 हुज्जतारों का कोनाहल एक एक टुकड़े के लिए लड़ उठने वाले कुत्तों,  
 कौआ और चींटा व तीक्ष्ण, मध्य और निपासी स्वर, भिक्षुओं, भगिनी  
 को गया फाड़ आवाजें छोटी बड़ी लड़कियों का यात्रिया का पल्ला  
 पकड़कर रास्ता रोककर पैसा माँगने को बिछाड़ और यात्रिया की  
 भिक्षियाँ य सब एक भजीव कोताहन पैदा कर रही थी। मन्दिरों  
 के भीतर बाहर, माँगने में पुजारियों, माँगने वालों, चढ़ाया चढ़ाने वालों  
 और मनोनी माँगने वाले यात्रियों में कई तरह के बाक् युद्ध चल रहे  
 थे। वहीं नारियल फाड़े जा रह थे, वहाँ पड़े देखी व नाम पर दक्षिणा  
 के लिए झुक रहे थे। यात्रियों के झुंड के झुंड में, थड़ा व अनुसा  
 पूजा करते, पून-बनाये चढ़ान घंटे बजाते, साष्टांग दण्डवत् करते  
 हाथ जोड़ते तिर जमान से छुत्ताकर मनोनी माँगने माया और नाव  
 रगड़ते प्रसाद बाँटते और बाहर निकल आते। फिर एक एक पं  
 के लिए मुड़बिरा की तरह चारों ओर से घेरने वाले भिक्षुओं भगिनी  
 तथा माँगने वालों से पीछा छुत्ताकर यात्री लोग किसी पड़ के नीचे व  
 वही कुएँ की मन पर, वहीं कच्चे चक्करों पर अपनी पोटीलियाँ खोल  
 कर जीभ और चल देने।

कुछ एक भी सम्पन्न परिवार यात्री थे जो कई दिन पहले मन्दिर  
 के पास बने मकानों में टहर गए थे। उनकी तरफ से पूजा के बाद  
 पका का लीर पूरा सन्दुभो का भोजन कराया जाना था। वहाँ इसा  
 प्रकार का भोजन चल रहा था। कुछ लोग बाजार में चढ़ाया का धाल  
 मही की चढ़ाने के लिए ला रहे थे। एक तरफ मन्दिर के पास दालान  
 में कुछ लोग बठ भाँव पाठ रहे थे, दूसरी ओर साधुधमा का दल धनी  
 रमाय सुल्ले गाँव की ली छठाकर बीच बीच में 'जय जय' पुकार  
 उठता। यात्रियों का समूह उधर भी जाता और माँगने के लिए फनाय  
 कपट पर गया धला, कौड़ी घनावरी बनाया चढ़ाना हाथ जोड़ता  
 और लोट आता।

बड़े मन्दिर के जगने के दोना-बानों में दो पुजारी बड़े यात्रियों को गान का प्रसाद दे रहे थे। भीतर एक आन्धी लड़कियों बजातीं पैसों पया के ढेर अलग कर रहा था। दरवाजे के पास दो-तीन आदमी लड़े डाँव का हिमाव गगात यह देख रहे थे कि भद्राव का मान इधर-धर तो नहीं किया जा रहा है।

लगभग दोपहर बारह बजे तक यही क्रम रहा। यात्रियों की सरवा म हुई। मन्दिर के कमचारियों में से एक-एक करके उठने लगा। जा सामग्री के ढेर अलग कर दिय गए। देवी की भूमि का मास रह स पीले, सात चीयडा व डेर, हार, फूटी कौड़िया पैंरों में कूचले न। इन्नी समय भाग घोटने वालों में से एक ने 'हर हर महादेव' ऐसी भावे हर गुन गाव की आवाज लगाई ता दूसरे ने उस दुहराया। तिसरा हाथ की बीड़ी फेंककर हाथ धोने उठा। बाल्टी में लाटे से मास धाली जाने लगी। वही समय एक कह उठा—

'ब ब ब जो विजया को निन्दा करे ताहि खाहि कालिका माई। बलो रे बलो।'।

एक पुजारी वहीं से भाँग की प्रशंसा में चीन उठा—

'गुढा ब्रह्म विचार सार परमाभासा जगद् व्यापिनोम्।'

सिल-बटटे का भाँग की बूँदें चटाने और कपडा बाल्नी पर ठककर ध्यान लगात के बाद एक-एक करके लागों ने नाटे चढाये ता एक बोला—

'भर, पेचे का है धोने-सी और त न। इतना कहकर उमने बाँटने वाले पर जार निया।

दूसरा बोला 'भाज मया ने सुनी है ता कमर क्यों रह।'।

इसी तरह सबन और दिनों से अधिक माशा में भाँग पी। ग्राह्यल भोजन कराने वाले यात्रियों का श्री आग्रह करके पिलाई गई। कुछ लोग रोटा लेकर निबटने चले गए और बाकी बीड़ी का धुमा उड़ान लग। चन्ना गिना जाने लगा। गारियल बतासे, म्पस पैसे, कौड़ियाँ तक बँट गई। लोगों ने अपना अपना हिस्सा लिया और मन्दिर की आलमारियों

म बंद कर दिया। जीमने के लिए जितने सागा को बुलाया गया था, उससे दूने लोग इकट्ठे हो गए। कुछ मिट्टी की तरह्र भाग लगाए जम गए और कुछ स्त्रियाँ और बच्चे लोटा और गिलास लेकर आ जम। एक तरफ कुत्तों का दल ताक लगाए बानाफूमी कर रहा था। पड़ोस और मंदिर की मुडरा पर बनार म बंठे कीए स्तोन बोल रहे थे। अंगन म बमो पर अंगोछ रखे ब्राह्मण भोजन के लिए जमा हुए। पास ही दो एक ठाकुर भी जमवर बंठ गए। एक ठाकुर सठ का धनतरा दिया बिंय ठाकुर हैं। भाजन गुरु हुआ ता सठ की पत्नी न पति म कहा—

य तो बहुत धान्मी आ गए, हमन तो बाग्ह का प्रबन्ध किया था।'

“हाँ, क्या करें ?”

फिर सब और ता इतनी जल्दा नदी बन सकता।”

म कुछ इतनाम करता हूँ।’ इतनी कहकर सठ ने अपने एक आदमी क साथ पड का बाजार भेजकर मिटाई मंगोई, सब बही जाकर ब्राह्मण भोजन पूरा हुआ। नेर साधुओं की बाँट दिया गया। पति पत्नी गाना न बादा बहुत खाकर सन्तोष किया।

पत्नी बोली— क्या है य लोग इतना खाया ?

क्या क्या जाय मुपन का मान है फिर ब्राह्मण।

दोना न दूला भाजन के बाग कुछ बही कर गए थे। नेप जा घारे धीर पिराक उनके पर डामगा रह व। मन्दिर के पट बंद हो गए। दबी की मूर्ति क पास मुबल हुए फूनों, बीयन्ग और इधर-उधर फनी हुई बानो कीड़िया क सिया कुछ नही था। दातान म पुजारिया की मारे मान रही थी और बाग्न पढी पत्तना पर कुत्तो और भगिया क सदा पल रहे थे। बबल दूर यात्रिया के सोटते हुए जय जय के स्वर सुनाई रह थे।

गंगा के तट पर पद्मपुरी नाम के तीर ग्राम के टीले पर देवी के मन्दिर में वर्ष में दो बार यात्रिया का मेला लगता है। इस 'जात' कहते हैं। अमावस और क्वार के महीने में दूर दूर से लोग देवी की पूजा करने आते हैं। गंगा का किनारा होने से स्नान करने वालों की संख्या भी कम नहीं रहती। यह गांव स्टेन से तीन चार मील दूर है। कच्ची सड़क पार करके यहां आना होता है। बहुत से गहरी यात्री वही स्टेन के पास स्नान करके लौट जाते हैं। पद्मपुरी तो सिर्फ वे ही लोग आते हैं जो कुछ दिन एकांत में गंगा सेवन की चाह रखते हैं या स्त्री की मानता मानते हैं या फिर ग्रामपास के गांव के लोग। इमनिण, दूसरे तीर्थों की तरह यहां हर समय भीड़ भाड़ नहीं रहती। गंगा के पूरब में यह गांव बसा हुआ है। बिनारे किनारे दूर तक साधुओं की कुटिया बनी हुई हैं। कहा जाता है यह गांव बहुत पुराना है। कुछ लोग महामारत की भटनाभी से भी इस गांव का सम्बन्ध जाड़ते हैं। बस, बड़े बड़े महात्मा, तपस्वी, साधु और सत इस स्थान पर तप, मनन और चिंतन करते रहें हैं।

गांव में ब्राह्मण, पटों और ठाकुरों की संख्या अधिक है। अब चमार, साधे गहरिय भी कुछ दिनों में काफी संख्या में यहां बस गए हैं। दस पांच बनिया के घर भी ये लकिन अब उनका नाम भर रह गया है। कुछ लोग व्यापार न होने से बाहर चले गए बाकी मर मरा गए। जमादार ठाकुर का किसी समय बड़ा दबदबा था। उनसे पहले ब्राह्मण का भी काफी प्रभाव रहा है। पर अब दोनों—ब्राह्मण और ठाकुर—जीवन बीतन पर पुढाप की तरह लडखड़ा रहे हैं।

यह कहना कठिन है कि गांव के इन लोगों पर शहर का प्रभाव नहीं पड़ा है। पाय ही कई अच्छे गहर हैं। तहसील, थाने और जिले के अलावा तीस चालीस मील के फासले पर एक जगह विश्वविद्यालय और ग्रामपास कई कालेज हैं, जहां इस गांव के कभी कोई लटके पड़ने चने जाते हैं। फिर भी, गांव में पढ़े लिखे लोगों की संख्या कम है।

जो पढ़ जाते हैं, उन्हें नौकरी के लिए बाहर जाना पड़ता है। इधर गाँव में यात्रियों के आने जाने का भी काफी प्रभाव पड़ा है। पहले यहाँ संस्कृत की एक पाठशाला थी, विद्यार्थियों को संस्कृत में बोलना सिखाया जाता था। वेद वेदांग के अलावा व्याकरण, 'याय शास्त्र' आदि पढ़ाए जाते थे। कुछ लोग जो उस पाठशाला में पढ़े थे, अब भी गाँव में हैं। ग्राम समाज के प्रभाव में आये हुए कुछ ठाकुर भी थे, जो अब नहीं रहे। पर उस ज्ञान के छद्म अब भी घने हैं। एक तरह से इस गाँव का सारा वातावरण अधकचरा ज्ञान और अज्ञान की कड़ी पर झूट रहा है। साधुओं के प्रभाव में अद्वैत वेदांत और गीता का भी इसमें प्रत्यक्ष पर मौखिक विवास हुआ है। एक तरह से यह कहना चाहिए कि गाँव के लोग साधारण पढ़ लिखे हैं और पढ़ा में काम चलाऊ संस्कृत के जानन वाले। यात्रियों के आने पर 'गंगा लहरी', 'गिरि महिम्नस्तोत्र', वेदपाठ और छुटपुट 'रामचरित मानस' का पाठ कभी-कभी मंदिरों में और गंगा के किनारे सुन पड़ता है। इस सम्पूर्ण ज्ञान का लक्ष्य एक ही है कि यात्री को किस प्रकार प्रभावित किया जा सके और दक्षिणा से मुद्धी गरम करने के साथ-साथ भोजन और भाँग की व्यवस्था हो। लहड़ू कच्चीरी खीर मासपुष्टों के लिए कौन-कौनसे हथकण्डे काम में लाये जायें अतिसे गाँव के सारे वातावरण में घी की सुगंध से बन पकवाना के लिए साक्षात्कृत जीर्ण और कूटकुडाल पेटों को तृप्ति मिले।

इधर ठाकुर और दूसरी जाति के लोग भी इस मोके से घृकना नहीं जानते। वे किसी-न किसी बहाने यात्रियों के विविध स्वादमय भोजन में अपना पशुन अधिकार समझने में नहीं हिचकते।

गंगा के पश्चिमी तट पर ठाकुरों की एक टेकरी है और गाँव के बीच में ब्राह्मणों की बस्ती। बाहर सोध और चमारों के घर। टेकरी से दक्षिण और पश्चिमी कोण में दूसरे टीले पर दबो का मंदिर है। गाँव के आन्त का छूती हुई गंगा बहती है। बाहर से गंगा घाट की ओर आने

पर एक लकीर की तरह सीधा बाजार है, जहाँ पंद्रह-बीस से ज्यादा दुकानें नहीं हैं—तीन-चार दुकानें आटे-गान की, एक-दो पमारी की एक बजाब का, छ-सान हनवाइयो की और बाकी पानवाना की। सुबह-साम किसी भी समय गंगा की रज भाव बाढ़ छाती, कमर और परों पर लपट बीड़ी पीत तम्बाकू फाकते पढ़ लिखाई द सकत हैं। कुछ घगरखी पहने, रामानदी तिनक लगाए लाग भी दुसाना पर बठ दीख पन्न हैं। सारे गाव का सड़क ठबड़-खाबड़ है और बरमात के कीचड़ से भरी रहती है। वही एकमात्र धान जान का साधन है।

गाम का समय था। बाजार में पान की दुकान पर कुछ लोग बैठ पान खा रहे थे। उसी समय दबी के एक पढ़ न आकर तमोली का एक पान का आदर दिया और बग बठ गया। बीड़ी का बग खींचकर घुघा छान्त हुए एक साथी न पूछा—तलिना पस्तान, आजकल ता मौजई मौज है जात तो टूनी पर रई है, मसुरी।

तलिता न पावन मुह म पान भरकर अवाव दिया—

का टूटी पर रइ है पाच आना तानि पाई चार गपत्नी हिम्सा म  
आए है। छ आना न नारियल बस, चार आना एक सठ दच्छिना म  
द गया। जिमायत बूँ बठो तो लड्डू सतम है गय। फिर बजार  
भूँ पडा मगाए बऊ हम न खनम कर दीन। आज कछु रग जमी हो तो  
सठ न ट बोले दई। अकिल रामयन न बीस लड्डू चौदास पना  
घोर बारह पूरी लाई। तुमनी जानी ही मरे दांत नायें, तोऊ पड्डू लड्डू  
दस पना और पांच पूरी में खाय सकौ। का बताऊं धीमें अब ह, खातई  
खात पगल उठि गई नायें तो पाच-सात लड्डू तो और लावतो। पना  
वा सारे लछमना न बूरे क बनाय ह भला कोइ कितन खातो। बोरो  
बूरा तो फाकी नायें जाय, तुम जाना।

तलिता प्रसाद न पान की पीक बीच बाजार में पिच्च करके धूकी ता उधर तेजी से जात धनुषा लोच के परा पर जा गिरी। वह

चौंदा और लोन्कर बोला—‘देखिक धूकी करी पड़ित आखेऊं चली  
गद है वा ?’

अरे लाथ के समरि के बोल, हमारी बसूर है, तोइय सुसारे नायें  
लीय । बड़े प्राय साट साय ।’

धनुषा सहमकर बोला—

तेउ साय उल्टी चोर कोतवान बूँ डटि । सीधी बात कई तो  
पन्ति बिगरि परे एक तो ऊपर धूकी, दूसर आँखें दिखावतें ।’

अरे ताँ का भयो, बामन-को धूकु है, सार पवित्र है गयी ।’ वहीं  
पास बैठे एक दूसरे द्यवित न मगाव म वह डाला ।

हा फाएबू कहोगे । हमई धूकिये कूर गय हैं ? जि तो नायें  
कहींग कि तुम्हारे मोहल्ला म हँ, जो चाह करी ।’

दूर में एक फटी-सी आवाज आई—

बजार है धनुषा बजार माहल्ला नायें । क्रोध में भरकर धनुषा  
बाना— बामन की बजार मेंऊँ दखती । मेरे मोहल्ला में ऐसे धूकते,  
तो टागि न तोरि ~~हई~~ <sup>हई</sup> ~~भयो~~ ।’ इतना कहकर धनुषा जस ही आग बढा  
वग ही तरह-तरह की डाँट ~~धनुषा~~ <sup>धनुषा</sup> पड़ने लगी । सलिला प्रसिद्धि ने डडा  
गम्हालकर कहा—

‘ठहर तो सद् तरी ऐसी की तसी दिमागई बिगरि गय हैं इन  
कमीनन क ।’

धनुषा बात का जवाब देता बढ रहा था ।

इधर दुकान पर बटे लोगो न कई तरह के ब्राह्मणों के प्राचीन  
महत्त्व और आधुनिक युग पर टीकाए की । एक बोला—

अरे कलजुग है कलजुग भया ।

कलजुग है तो का भयो बामन अबऊँ ऐसे गय बीत नाय ।’

पड़ित नरऊँ तो बामनई हैं ।’

नर नई ताँ बमार बामन एक करि दय हैं ।

जि गांधी का प्रताप है न होती गांधी न जि जीवत आवती ।

अब का है, जसैं तसैं जिंदगी काटनी है।”

‘अरे होयगो गांधी ह्या नायें चल काळ गांधी फाटो की। गंगा मया के सामने बढे-बढे सिर टेकें हैं’ चौध ने कहन हुए मुँह पर हाथ फेरा और जेब मे सीक निकालकर दान कुरेदन लगा। इसी समय गंगा-तट मे अगाछा पढ़ने सारी नेह म रज लपट, गंगाजली हाथ म लिये एक युवक आकर रुका और पूछने लगा—

‘का बात भई, जि लोघेकी का बकि रह्यो हो, मन म तो आइ केँ लागे दे माहें सारे केँ पर चलोई आयो न जाने का बात हती।’ चचा तुमसू कछु बात भई का ? उसने पास बठ एक बूढ़े मे पूछा। लोगा मे से एक ने बातें सुनाड तो बोला—‘मरम करि दगो सारेन बू, समझि का रक्खी है आमन अरुई इनने गय बीत नायें।’

उधर म एक ठाकुर आया तो कहन लगा—अरे अब न काई वामन है न ठाकुर, नायें तो याई गाम मे मजाल है कोई सिर तो उठाय जातो। खोदिकै न गाडि दय जाते सारे। यह कहकर उसने मूँछों पर ताव दिया और पान वाले स पान क लिए कहा।

‘पीछे के सब पैसा देठ तउई पान मिलिगे तुम समझा में का तक उधार कह ?’

‘अरे द दिगे, क्या मरी जाय, किनन हैं बोल ?’

‘तुम जानो।’

‘तू बता।’

‘बारह आना है गन हैं।’

ठाकुर न ठठाकर अपनी गरम पर परदा डालते हुए कहा—

‘तो का भयो मरी क्या जाय है लगा पान द दिग। अब, जान नई हैं यहाँ पसा साला की कभी परवा नही करी।’

‘पत्ते पैसा दठ ठाकुर, जि बान भूठी है रोज तुम ऐसेई क दतो।’

‘तू समझ है, तू नायें दगो तो और कोळ नायें देगो।’

तो और मूँ से सेठ मे मरीच आदमीळ केवतलक उधार करे,



तुमई बताओ ।’

“प्रच्छा आज तो द नत पसा चुकाय दिग ।

पान वाले ने पान देते हुए याद न्तिताया—

‘साथे बारह घाना याद रखिया ठाकुर ?’

‘हाँ, हाँ मरी ययो जाय, सा एक आना के कोरे पान द ।”

पानवाले ने बमन से बुडबुडान हुए एक आना के पान लिये तो ठाकुर पसारी की दुकान पर सुपारी बत्थे के लिए पहुँचा । भाँय भाँय के याद सुपारी बत्था लिया और हलवाई की दुकान से आध पाव दूध भी उधार लेकर तीन चार बुल्हड उठाए । इसके साथ ही धनियत्थ व महत्व पर व्याख्यान देता आँखा से आभल हो गया ।

पानवाला कहने लगा—

‘बजार म कोउ ऐसो है जाको या ठकुरा प उधार न होय बाऊ के दस बाऊ के पाँच ।’

‘मरे ता हम बा जान नायें अब इनम र ही का गयी है ठसवाई ठमक है बस । बनी स एक ने कहा—

‘उधार लिंग ता पसा दव की नाम नहीं लिंगे । मुडचिरा है मुड चिरा । उधर हलवाई अपनी गद्दी पर बठा ठाकुर पर कमण्ट’ कर रहा था । तभी पसारी एक गाहक का मिटनी का तल देता हुआ बोल पड़ा—

पद्रह रुपया है प द्रह नकद, दव की नाम नइ है ।

बनी कबळ तो दिगई एक और आदमी ने गली व माड न बाजार म जाने हुए कहा ।

‘त एक पान माउम सबाय द’ कहकर उसने पानवाले व पास इक्की फेंकी ।

‘तोय नितनो मिली माता प सू, एक न पूछा ।

द रुपया तीन घाना चारि घाना दच्छिना,’ ललिता प्रसाद की तरफ मुँह करके बोला तुम्हारी तो डबन हिस्सा हो न ?’

हमउ एक पान लिंग या इक्की म सू, एक माय द ।

‘हा, हा एक पान इहेठ द । आज तो रबड़ी उड़ेगी, लछमना सूँ  
 कह चायी है उसनाद ऐमी चकाचक बने कि रंग जमि जाय, का है कल्लि  
 कू चूनर भारिक मरनोई तो है । तोल भर की अण्टा चढायी है । ‘व  
 व व घोषा रह न गम । पान म तम्बाकू पीनी ढारियो रे ।’ वह  
 पान खाकर उसी पाम की गली म छिप गया । इसी समय बसगाडिया  
 की चूँ चूँ सुनाई दी । दुकानों पर बड़े पटा व कान खड़े हो गए ।  
 यात्रिया की गाडियां थी । लोग उठकर गाडी के पीछे हो लिये । नाम  
 घाम, पते-ठिकान की पहिरिस्तें खुलीं बहिया साईं गइ, घमनालाघ्रा  
 के दरवाजे चरमराये । बाजार म हल्का कोलाहन फैल गया । उधर  
 दीय जले और हलवाइयों ने मिठाइयो के थाल झालमारिया स निकाल  
 कर तरीनों पर सजा दिए । साधु-सयामी, गृधस्था का आना-जाना  
 बढ गया । कोई दूध पी रहा था कोई रबड़ी, कोई पठा उठा रहा था ।  
 अधिकतर लोग कुल्हड़ो म दूध या दोनों म रबड़ी मिठाई ले जा रह  
 थे । सबकी यह शिकायत थी कि मिठाई अच्छी नहीं बनती, हलवाई  
 बेईमान हो गए हैं । कोई खाय तो क्या खाय ? कुत्ते चमुल होकर  
 खाने वाला के दोनों, कुल्हड़ों को एस दब रह थे जैसे पपीहा स्वाति  
 बूँद की प्रतीक्षा में आममान तावता है । फिर पूछे हुए कुल्हड़ो दोनों  
 पर गुरति हुए उनका एक दूसरे पर दूट पडना या तो उन्होंने पडों से  
 सीखा होगा या फिर उनसे पचपुरी के लोगों न । यह कोई नहीं बता  
 सकता इसकी गुप्तान कहा और कसे हुई ।

सनिता प्रमाद बाजार की खबरों मे अपन को ताजा करके माता के  
 मंदिर पहुँचा तो ठाकुर बिक्रमसिंह पदों को गालिया द रहा था । नने  
 से उसकी आँसू-आँसू, जैसे निकली पड़ रही हों । दा एक आदमी  
 दूर बठ चितम पी रह था । वे ही जब-तब ठाकुर की खुगामद करके  
 उसे शांत करने की कोशिश करते, पर वह तो गालियों के घोडे पर  
 सवार था । वह कह रहा था— एक एक को नखूँगा, माता को, दबी

का चंगावा छिपाकर रख लेते हैं। हम लोगा को बारह आना मिलना चाहिए तो कभी अठनी या कभी नौ आने दकर टाल देते हैं।" फिर जोग में धाकर बोला—“आखो मे घुल भावन हैं साल। यात्रियों का माल चरते हैं सो ऊपर से। उनकी औरता को घूरते हैं सा घाते में। जसे सारे सुख इन साल बमटों के लिए हैं। अब से हर ठाकुर की पत्तल लगा करगी तभी इन बामनो का यात्री लोग गाना खिला सकेंगे। मैं अभी नाकर बलबीरसिंह से बहता हू। य साले माल चरें और हम टुकुर-टुकुर देखते रहें।”

दूर बठा बामन का एक बटा बोला—

‘ठाकुर का बामन है जागे बामन तो बामनई रहग और जात्री तो बामन के ही खगाम हैं, ठाकुरन के तो खयायउते रहें।’

देवी तो हमारी है हमही इसके मालिक है सुमतो साले इसके पुजारी हो।”

“तो ठाकुर तुमई पूजा करो हम काहें?”

“हाँ, हम ही पूजा करेंगे।”

“फिर कौन धेलाऊ नायें बढावगा सारी जात बंद है जायगी, कहें ठाकुरउ पुजारी भये हैं? एक व्यक्ति ने दूर से चिलम पीते हुए कह दिया।

तो हम इन मूर्तिया को तोड़ दगे काई परवाह नहीं।

सलित्ता प्रसाद को देखकर ठाकुर बोला—‘सलित्ता मिसिर, कहे दता हैं। मैं मन्दिर का लडहर कर दूँगा साले तुम साग रोज यात्रियों का मान चरते हो और हमको कुछ नहीं मिलता। हमें बहन मालिक हम देवी के और हम ही खीर मालपुष्पा को सरसत रहें और तुम साले भात उठाओ।’

‘तो ठाकुर त तो सग गू चली घाई है छत्री तो रच्छक रहें हैं। सलित्ता प्रसाद न नरमी से पुचकारने हुए ठाकुर को उत्तर दिया।

‘एग रच्छक निम बामन, खबरे मैं बठा टुकुर-टुकुर दलगा रहा

और तुम सारे मान चरने रहे, तुमसे मे किमी ने इतना न किया कि सेठ मे कहकर एक पत्तन इधर भी खलवा देत ।'

'तो ठाकुर हैकै तुम का खाते ? जि तो बामनन को काम है ।'

"मे नहीं मानता, ठाकुर के भी बैसा ही मुँह है जैसा बामना क, उनका क्या कम स्वाद गगता है और तुमका ज्यादा, सब गलत बात है ।'

तो या म का ह, तुमउ नाऊ बारी के पास बैठ जाओ करो, एक पत्तन मिल जाओ करंगी ।'

ठाकुर और भी समक उठा । ललितता प्रसाद न हाथ पकड़कर घात करत हुए जय से एक बीड़ी निकाली और बोला—

"तेउ बीड़ी पियो याम का रक्खा है आगे भूँ एउ परोमा की इन्तजाम है जायगी ।'

ठाकुर बीनी पीता वहीं चबूतरे पर बैठ गया, एक कग खींचकर बाता—

मे कुछ नहीं मानता, न गगा को भानता हूँ न तुम्हारी दबी को ।

'ता देवी का चनाओ ललग ?'

'मुफ्त म मिलता है तो क्या ओट दू गा ?'

मुफ्त उपत की बात नायें, बात ता बामन ठाकुरन की है । हमन तो सिरफ याई गाम म ठाकुरन कूँ दबी की चनायो लेन दखी है तुम जानो ठाकुर, जि तो बामनन की काम है ।

गुप्पे म ठाकुर खडा होकर बोला—

बामन क्या माले दूसरी जगह मे पदा होने हैं और ठाकुर दूसरी जगह से क्या फरक है हमम और तुमम ?

दूर बठे हुए एक लडके ने कह दिया—

'बामन परमपुर के मुख सा भये हैं ठाकुर ।'

इसी समय और लाग आ गए चबूतरों और पास पडे तलों पर बठ गए । ठाकुर फिर भी बड़बड़ा रहा था । लाया न उसकी बातें अन सुनी गरफ आपम म बानना गुरू कर दिया । ठाकुर थोड़ी देर बाद

उठकर चला गया तो एक ने कहा—

“पाय ठाकुरे बड़ी जलन है, लोग वामनन कूँ क्यों खड़ाव हैं, क्यों पूजें हैं। देवी कूँ पत्थर माने है और चढ़ाय कूँ मूढ फोरे है।”

ठाकुर क्या करें, भूखे मर रहे हैं काम होय नहीं है, तुम जानो, जिमानारी जब से गई तब स इनके और बुरे हात है। दूसरे ने गम्भीर होकर जवाब दिया।

तोसरे ने मजे में घुसत होकर भ्रंगड़ाई ली तो बीषा वाला—

गोता करायेले चरबि क्यों है ?

‘जात के बाद जागो, रखी नार्ये जाय कछु पैसउ तो हाय गाठि म। परमादी से कई हो रखी स क सीधी अइयो, अभी लौटोई नार्ये, याकी सिर फोहूँ। नसा तज है रखी है।’

‘मरे भा जायगी, मरी क्यों जाय ?’

मजे में घुसत बैठे हुए उसने देखा परसादी रखी का दोना लिये हुए भा रहा है तो गगाचरण ने दूर से पुकारकर कहा—

‘रखी लवे गयी हो क ब्याह करायेले, यहाँ नसापत्ता म पेट घपकि उठी ला जल्दी।’ परसादी ने चुपचाप दोना दिया तो गगाचरण वहीं घटा घटा सब घाट गया। पाठ रहे सोठे से हाथ धोकर घोती से पाछ लिए और एक आदमी से बीड़ी मागकर पीता हुमा टीले से पीने उतर गया।

रात बढ़ रही थी आरती करके धीरे धीरे पुजारी आया, तो ललिता प्रसाद न पूछा—

‘कुल कितनी बनी ?’

पधार रुपया। बीस तो मैंने भक्षण छिपाय लीह तोत बाटे।’

‘तो दस भोक् ?’ ला।

‘दो मैं भीर सगी।

क्यों ?

“दुगियारी क नाय दउग ?”

“वाये बात की हुसियारी हमऊ तो आप दते ।”

“वही मुसकिल सू बचाय है । ठकुरा गिद्ध की तरें देखत रह्यो हो । मैंनेऊ कइ, सारे तरे जसे तो मैंने टांग के नीचे सू निकारि दये हैं, पेठ घाठ और लेउ ।”

सलिता प्रसाद ने आठ रुपय अटो म खासि और पुढिया म से एक पान निकालकर खाया ।

“जमानो बड़ी खराब है हुसियारी सू न रह्यो तो सब बचाय जायें । दिन भर मेहनत हम करें, रान कू मन्दिर म हम रह रखवानो हम करें, और ले जायें जे ठकुट्टा ।”

लछमन चुपचाप बठा रहा, सलिता फिर भी बड़बड़ा रहा था । दो कुत्ते आकर उनके पैरों के पास बठ गए । सलिता प्रसाद उठकर गया और चार पूरी दोना को डाल दी । दोन्दा लड्डू दोना खाने लगे । उसने बताया सेठ जब ब्राह्मणा को भोजन करा रहा था, और सेठानी भोग लेकर मन्दिर म गई तभी मैंने दस-चारह लड्डू और पूरी निकालकर चुपके से आलमारी म रख दिए थे । लछमन का जो लड्डू खाकर न भरा ता वह मन्दिर के एक काने से एक पत्तल म कुछ पड़ और पूरी ल आया । सलिता प्रसाद कुएं से पानी भर लाया । दोनो न डटकर भोजन किया । लछमन बाकी बचा कपडे म बांधकर घर ले गया । सलिता प्रसाद मन्दिर की रखवासी के लिए दालान म चगाह पर लेट गया ।

सलिता प्रसाद बूढ़ा नहीं है पर दाढ़ गिर गए हैं । कांठी काफी कड़ी और मेहनती है । उम्र चालीस-पैंतालीस के बीच । बचपन म थाप न सस्कृत पढ़ाई तो मन न लगा । पाठगाना गाव के बाहर गंगा के किनार थी । सबरे दो रोटी पोटली मे बांधकर ले जाता और वही दम बजे के लगभग गंगा नहान के बाद अचार या नमक से खा लता । फिर इमली तोड़ता खाता घर लौट आता । मौसम के दिना म कभी-

कभी सेतो से बपास के टोटे तोड़कर उससे बदले गुड से राटी चलती ।  
 वह ललिता का आनंद का दिन होता । बाप माता के मंदिर का  
 पुजारी था । वह समझना, लड़का दास्त्र-पारंगत हो रहा है, बस, कुछ  
 ही दिना में पाणिनि या पतञ्जलि बन जायगा । कहन का ललिता पाट-  
 दासा जाता पर घाटी पर यात्रिया से पसा माँगता और चुपचाप ठीक  
 समय पर घर चोट आता । एक दिन अचानक शाम का गाँव में भाप  
 गुरजी से पूछने पर भाबूत हुआ कि ललिता महीना से दिखाई नही  
 दिया । बाप भगती ने घर आकर खाना खात लड़के को दवा ता  
 मन्दिर में कुत्ते की रखवाली करने वाल लड़का से धुन डाला । उसकी  
 आदत फिर भी न मुधरी । उम के साथ शरीर मजबूत हुआ बढ उठा  
 तो उजड़ड़पन बना । चोड़ी छाती मजबूत पुठे और बफिक्री के माल  
 ने ललिता का रसिया बनने के साथ उच्छ्वस और अगिष्ट बना दिया ।  
 बाप तो जैसे उसका दोस्त हो गया । माँ को उसने कभी सँटा ही नहीं  
 और एक दिन पत्नी की लड़की का लेकर भाग गया । पर वह इस  
 जान में भूल स्टेगन पर ही पकड लिया गया ।

आतिर घाट पर घटाई बिछाकर चदन, रोली गगारज, कधे, चागे  
 के सामान के साथ वह स्वयं हली मिल पीने चदन की मछली माये  
 पर बनाने में सारे घाट पर प्रसिद्ध हो गया । मंदिर की पूजा से उस  
 घाट पर बठन में अधिक मुग्न मिला । चदन में कपूर मिलाकर उस  
 टण और पुनपुनार बनाना उन घाटवाला में इसका सबप्रथम  
 आविष्कार था । तबरे ही भाँग का गोसा चढ़ाकर सरसा के तल में हून  
 बाल धाड़कर और सारी देन में चदन गगारज पीनकर जब वह घाट पर  
 बठता तो उसका मजबूत और माँवता शरीर रामायण में बणिन लका  
 के किमी निषमक्त का चित्र उपस्थित कर देता । दोरे पड़ी, लान लाल  
 मजराती भाँवों में धक्क के साथ-साथ भ्रमता और उजड़ड़पन भाँव  
 उठने । जान की नींव में उम एक अपूरा मकल्य और पाँच-सात 'गंगा  
 नहरी के लोक याद थे ।

एक दिन गाव का एक आदमी उसे ब्याह कराने ल गया तो उन पाच सात श्लोको और सक्त्प के सहारे उसने वर-वधू को पार पहुँचा दिया । उसके व दत्ताक श्राद्ध में, मरे हुआ के पिण्डदान में भी सहायता करते, सयनारायण की कथा बनेकर यजमान की कामना पूरी करते । उसे गाव का शौक बचपन से ही था । गला बहुत अच्छा तो न था पर ऐसा बुरा भी नहीं कहा जा सकता । अकेली-दुकेली स्नानार्थी औरत के सामने उसका सामगान फूट उठता—

‘तुम हमें दखो न दखो हम तुम्हें दत्ता करें ।’

माय ही नय गंग की धुन से तमाम नहाने वाला पर वह अपनी भक्ति की धाक बैठा देता । एक दिन मगली ने दूसरे गाव से लाकर रीछ के साथ बदरिया बाघ दी । इधर उधर चरने वाला साढ़ बैल बनेकर गहस्य की गाड़ी में जात दिया गया । घाट पर मामूली दिनों में चार पाच घाने कुछ घाटा, गेहूँ चना, गुड़ बाजरा, मक्का, सतनजा मिन जाता । भले के दिना में अजिब आमदनी हो जाती । कभी बाई यात्री भोजन करा देता ता नही, पढा बुरा, पूरी और लड्डुभा पर हाथ साफ करते उसका पेट ‘ब्लेडर’ की तरह तन जाता । साँस की नालिया भारी हो जाती । फिर भी ललिता के प्राण भाग्यान् के अमित आनन्द में घन की टेरी पर साप की तरह भासों के फन फैलाए निक्कन का नाम न लेते । थोड़े ही दिना में गाव में भोजन के मच की टीम में वह ‘फस्ट इनेवन’ में आ गया । कसरत और नाँग, यही उसके दो मित्र थे । सृष्टि के निमाण में ब्रह्मा के आत्मा का पालन करते हुए यद्यपि उसने अपनी तरफ से कोई कार कसर नहीं रखने दी, पर घरती ने उन्हें अपनाया ही नहीं तो वह क्या करता । तेरह की सृष्टि में तीन बच्चे—एक लड़का और दो लड़कियाँ । ललिता ने चाहा यदि वह लड़के को अंग्रेजी पढाकर बकील बना सके तो क्या गाँव उसकी भकुटी का तेज सह सकगा—नही । इसी उद्देश्य में उसने यादी हिन्दी के बाद पास के कस्बे में लड़के को अंग्रेजी पढने बिठा दिया । पर पिता का



अनुगामी मसस्वी पुत्र पाँच साल के निरन्तर प्रयत्न से जब एक भी बलास आगे न बढ़ा तो पिता का मजबूर होकर, अपने हृदय से पुत्र के बकील बनने की 'बील' उखाड़ लेनी पड़ी। हारकर एक दिन शुभ मुहूर्त में उसे अपने पाम हाँ तरत बिछाकर घटवालिया बना लिया। पुत्र को विज्ञान बनने की धुन थी, उस इस काम से घृणा थी। उही जिन लोगों ने देखा, उसने आघबवाई पर एक खेत ने लिया है। ग्राम के मौसम में उमने बाग ल लिया और ग्राम बचने लगा। बाप की मृत्यु के बाद ललिता ने मंदिर की पूजा द्वारा अपना जन्म सुधारने का निश्चय किया। अब वह ठेके पर मंदिर का पुजारी था। उसने बहुत ग्रामदली तो नहीं थी फिर भी पट भर जाता था।

ललिता ने जीवन में रोटी दाल को कभी भोजन नहीं माना। उसकी दृष्टि में पूरी कचौरी लड्डू मध्य स्तर के भोजन थे और रबड़ी पेडा तीर उच्च स्तर के। इसलिए हर सबेर उसकी कोई कामना जागती थी वह स्वर्ग की उसी आतिरी सीढ़ी पर पहुँचने की, जहाँ जाकर उसके वितर भी पुष्प होन रह हैं। बपड़े का महत्त्व उसे कभी भी अपनी ओर नहीं खींच सका। इसलिए भोजन के समय जैसे अन्न की भिक्षियों, कुत्ता से बचाया आवश्यक है इसी तरह पट की सुरक्षा के लिए उसी बपड़े के महत्त्व को स्वीकार किया। लड्डू रामधन बहू के साथ अब घर का मासिक बन गया। ललिता, पत्नी की मृत्यु के बाद ने रात को मंदिर में ही रहने लगा था। इससे दूसरे पुजारी गणेशचरण का भी गुनीला हो गया। अब वह रात में घर पर रहता। एक तीसरा पुजारी था—सबहणी का रोमी लक्ष्मण जो बीमारी के मारे बचल दिन में ही मरता था। उस समय घर में पत्नी या तो मरिचियों की सख्या गिनता था फिर जगन की घरती की अपने पट का प्रसाद बाँटता रहता।

उस चतुर्थी की रात में अंधेरा अपने पूरा यौवन पर था। अंधेरे में धमरती बान बस की छाँड़ की तरह मंदिर के दरवाजे पर कड़क तोन का दीया अपने अस्तित्व के लिए जल रहा था। दिया 'लो' के

उसके सारे अवयवों का जैसे अधरे न पी लिया हो। मंदिर के मुख्य द्वार पर दो कुत्ते चौकसी कर रह थे। मामूनी तीर पर और समय सोने से पहले ललिता प्रसाद मुख्य द्वार बंद कर देता, पर आज न जाने क्या वह चुपचाप चटाई पर जा लेता। अलमारी से उसने न बिस्तरा निवाला, न लौटा हो पानी का भर कर रखा। वह नगे म सुस्ताने जा लेता ता सो हो गया। उस समय मंदिर में उसकी नाक हारमोनियम बजा रही थी। पहले तो स्वाभाविक रूप से ललिता प्रसाद की नाक के सरगम पर कुत्ते चौंके, गुर्राए, फिर अपनी पहचान की भूल पर गम के भारे चुप हो गए। फिर भी गाव के कुत्ता के प्रास्ताविक व्याख्यान सुनकर वे कभी-कभी अपनी ओर से मशोधन पग कर देते। अथ भूख प्राणियां में 'लेह' की एकान्त तलाश में सूझर कभी-कभी धापस में घुरघुरा उठते। कभी मधान से अधनींदे किसानों की चेतावनी भरी ललकार सुनाई द जाती, जिससे भाऊ के झुण्ड में भागती नीलगमा की सुरसुराहट प्रसर हो उठती। एक तरह में सब आर चुप्पी थी। मंदिर के नीचे बहती हुई गंगा की लहरें भी ऊध रही थी।

न जाने कब तक ललिता भीषा-नींदा में पड़ा रहा कि इतने में कुत्ते गुरगुरे, परंतु हल्की डपट सुनकर चुप भी हो गए। ललिता प्रसाद अब भी हवा को अपनी सांसें बांट रहा था। वह तो जैसे ब्रह्माण्ड में चेतना तनुषा को छिपाय सामा की उलट-वामी पड़ रहा था।

'ललिता, ओ ललिता,' धीरे से एक आवाज आई।

ललिता फिर भी खुरटि ले रहा था अंत में हिलाने पर उसके सुप्त प्राण लौटे।

"कौन?"

"मैं हूँ सो रहा है?"

"हां कहकर उसने करवट बदली, 'तू'।

"हां कहकर वह पास ही चटाई पर बैठ गई।

'बड़ी अधेरी है।'

“मुझे धंधरे म भी दीयता है ।’

प्राज ब्राह्मण भोजन हत मैं सोची तोऊ बुलावतो पर फुरसती  
नायें मित्री कछु सायगी ?’ बहवर नलिता अलमारी म से तड्डू पडे  
धोर पूगी तिकाल लाया । दोना न मिलवर छाया । खाते खाते चमेली  
बोची मुझ भी फुरसत नही मित्री और मिलती तो भी क्या आती ?  
रिपुमन मगनिया, हाती सरापत गगापुर गय हैं ।’

क्यों ?

तू नहीं जाने जसे तू तो बिलकुल भोला है ।’

‘तमभि गयी तेरो कितनी हिंसा है ?’

चार आन मैंने कही, मैं बताती हूँ रखवाली करती हूँ तो चार  
आन से कम न लूँगी ।’

तो मानि गए ? दखि काऊ दिना पकरी गई तो फाँसी प धरी  
मिनगी । तरे है ही बीन जो इतने परकद रच है घाट प बैठई है ।  
माप तो तरी पाम गसाद नायें चमेली ।

चमेली न कोई उत्तर नहीं दिया । यह खाकर मुँह पर हाथ फेरने  
लगा । चन्द पर गिरे घन को घंदाब से साफ करत हुए उसने जब  
स घीड़ी निवाली और पीने लगी । फिर वाली—

माता रपया बिन धुरा लगता है नलिता, मैं तो डाका नहीं  
ढानती । पकडे जायेंगे फँगे तो मैं ही । जिस दिन ऐसा हागा तारे  
हथियार और गहना गगा म फेंक दूँगी ।

ता तोय इतन रुपयन की करती का है भरली जा ?’

‘चमेली जान । बहवर चमेली हँस दी । मैं जाती हूँ जरूरी  
जगह जाना है । यह उठी तो रुककर बोली ‘बाप-भटों म से किसको  
पुनूँ नलिता ?’

क्यों ?’

रामपन की चाँगे मराय हो रही हैं जब-तब मुझसे मतसारी  
करता है ।

‘मैं तो बामूँ बापनउ नाऊँ, मर जान तो बु मरि गयी । बा निना बाकी औरत न मरी उइज्जती कर दई ।’

‘अर, मैं उसे ठीक कर दूँगी । तू चित्ता मत कर । यह तो मर बायें हाथ का खेल है । चमेरी कच्ची गाटियाँ नहीं खेली है ।’

नलिता हेमकर बाला, “यामें जा सक है, नो सी चह बाध भइ है ।’

दोनों बाहर आ गए । बिना हाते हान चमली ने कहा—

‘बदरीनाथ जगन्नाथ, डारिका चलेग सतिना ।’

‘मैं तो नगी हूँ चमली सी दो सी सें तो कुछ है नायें सक ।’

मैं किसलिए हूँ तू परवा मत कर ।’

चमली अंधरे में गायब हो गई, सतिना विस्तर बिठाकर लेट गया । चमली से रामयन की हरकतें सुनकर पहले तो उसे बड़ा गुस्सा आया पर भाग के नंग की नपुंसकता में घोर घोर नात हो गया । उमन साधा, यही बीन झूठी है, न जान कहा-कहा खेलती रही है, क्या-क्या किया है इसन । उसे वह दिन याद आया जब वह एक बार उसे लेकर भागा था और स्टेशन पर ही पकड़ लिया गया था । यही साधना वह सो गया ।

चमली नलिताप्रसाद से विदा हाकर गया क किनारे किनारे गहरे सारों में उतरती-चढ़ती लगभग एक मील दूर एक भोंपनी में घुम गई । उमन बटून ही हल्का एक दीया जल रहा था । एक और चटान बिछी थी । उसी पर कम्बल बिछाए एक आदमी लेटा था । चमली के घुमते ही उमन उचककर पूछा, बीन ?

‘चमला । अभी नहीं आय ?’

‘आत ही होग,’ कहकर वह उठा और बाहर जाकर बरानी में चिन्म में आंच रख लाया । —दाना चिन्म पीन-नमे—

‘मुलफा नहीं है ?’

खतम हो गया । एक चिन्म का था, सा लाग पीकर चन गय ।

‘हैं रांड चिपम में नहीं पीती, तू ही पी ।’

वह व्यक्ति चिलम पीता हुआ बोला—

‘गंड को गंड कम अच्छी लग सकती है चमती ?’ कहते हुए वह मुस्कराया ।

‘तू क्या नहीं गया ?’

‘तू ही समझ ले ।’

चमती चुप बठी रह्यो, वह व्यक्ति जरा पाम सरककर बोला,  
चमती ।

चमेली फिर भी चुप रही । थोड़ी देर बाद उमन बहा—

दूर हट के बठ ।

वह और भी निपट आ रहा था । चमेली ने भाव दया न ताव,  
कसकर एक चाँटा उमके मुँह पर जड़ लिया और दूर हटकर बठ गई ।

वह आदमी थोड़ी देर चुप रहकर चमेली पर जा टूटा । वह भी  
बम न थी सडातड हाथ के मोटे बडा न उसे मारने लगी । जहाँ  
पाया धाट लिया सोना में काफी देर तक मिसमिमी सडाई होती रही ।  
उम नौपनी में तज सोमा के सिवा चाँटों और घुक्का की आवाजें आ  
रही थी । चमेली टांग न उम घसीटकर बाहर ले गइ और सडातड  
नामान तालें तमासी बोली—

‘त और ल मरे, बस लिया मजा ?’ सीपकर घटाई पर आ  
बठी । वह आदमी बाहर पडा गाली देता रहा ।

‘तू दूंगा डायन है डायन ।’

चमेली पूनी दुई साँसों से बह रही थी—

‘भीतर पर रगा तो मरे, सादकर गाढ दूँगी ।’

एक त घटे बा मुछ आत्मिषा के परा की आहट सुनाई दी ।  
ये एक एक करके भौपडी में घुसे । हथियार संहाने पड के नीचे गल्ल  
में गये म सपत्कर रग लिए और मिट्टी डालकर गडा बराबर कर  
दिया । चमता ने दीप की ली जैसी कर दी । एक त घन्टी में से

सुल्फा निष्कातकर बाहर पड़े आदमी से मरने को नहा और चटाई पर लूट का सामान फला दिया गया ।

‘आज अच्छी बौहनी नायें भई ।’

"बनिया हाना तो कुछ मिलता, औरता से क्या मिलेगा ?"

‘एक हजार का माल तो होगा ही।’ बहकते-पहते ने गहने रुपये भ्रमण भ्रमण बिये। दूसरे ने टाच जनाकर गिना। एक मौ भ्रमणातीस रुपये चार भ्रान के भ्रलावा साने-बाँदी के गहने ध। रुपया का भ्रावाज लगी, ‘ले गला जल्नी से। सत्र चिलम पीने लगे। रुपया ने बोने में पड़े कामने मुनगाकर धाकनी बनाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर में मोना चादी भ्रलण भ्रलण करके गलाया और टुकड़े करके सबमें बांट दिया गया। घंटे भर के बाद चटाई और दीय के सिवा वहाँ कुछ नष्ट था।

चमेली न पोटली धोती की गाठ में बांधकर खोम ली और सीधी घर पहुँची। उस समय टाई-सीन का समय होगा। पाच यज्ञ-यज्ञते गंगा नहाकर सन निछाया, हुरमा लेकर चंदन चिसा और माला लेकर राम राम बरन गयी। वह सबरे सत्रमे पहले भाकर अपने तख्त पर चंदन तयार करती और माला लेकर बठ जाती। सबरे महान वाले यात्रियो में सत्र डम अच्छा समझते। शक्ति घर आटा, चाबन, गुड़, जो कूठ बनता दते और तिनक लगाकर उन दत्त। देर में धान वाले धाटिय उसस ईर्ष्या करते। बनी-बभी काई मजाक में कह बठता—

‘चमेली तू इतनी बर्माई हो का बरगो, आगे नाथ न पीछ पधा ।  
सुंदरी भयो नइ के आय गई ।’

चमनी जवाब देती, 'नया, इतना आना ही कहाँ है, थोड़ा-बहुत मिलना है उम्मीद म गुजारा करती हूँ। न जाने कितनी चिन्तनी है। हारी-बीमारी म तुम्ही सागा का सहारा है मर जाऊँ ता गगा म फेंक दना।'

‘हा हाँ, क्यों नहीं ?’ एक कहता ।

“तू मोय अपनी बारिस बनायल चमेली ।” दूसरा कहता ।

‘तुम सभी तो मेरा बारिस हो सब-कुछ तुम्हारा ही ता है ।  
चमेली जराब देनी ।

चमेली खी बोली म बात करती तो लोग कहते—

‘फारसी बान है चमेनी ।’

दूसरा जवाब देता अरे दुनिया देखे गई है । कौन-कौनसे गाम म  
रई है तू ? उही म से एक कहता ‘गाम नहीं सेहर कह । सेहर म रई  
है—बम्बई बलकत्ता एमदाबाद, जाने कहा कहा अपनी मानिक के साथ  
घूमती रई है ।”

झलीर म गया बनी ही सो गया प आय गई ।’

चमेली अपने गम-ध म उनका प्रश्नोत्तर रोज सुनती और मुस्करा  
दती ।

एक दिन यात्री नहा धोकर चल गय थ । घाट वाले मक्खी मार  
रहे थे कि एक नौजवान घाटवाला उमरे तरन पर बढकर कत्न  
लगा—

चमेली बरमात म मेरी टपरा गिरि गयी है रहन कूँ जगह नायें,  
तू कहे ता तर ही घर आय रह । यारे दिनन की बान है । मकान धन  
जायगी तो चलो जागा ।

दूसरे ने मुना तो बढो मे हँसकर कहन लगा—

‘आन्नी बुरी नायें चमेली तर सब बाग करगी ।

चमेली न जराब दिया नहीं गया मैं नहीं रस गवती मैं  
भवती ही भनी ह ।

मीधे माँ घाट वाले माना कि चमेली नक औरन है बचारी जम  
तस जितनी क दिा बाँ रहा है ।

चमेली बहुत गूरगूरत नहीं थी पर बुरी भा नहीं थी । मनोना  
क, गाफ रग, मोन घोर लम्बा मुँह घाट घोर नाक पतने तीधी और  
नगीची और उमरा माथा, मुना हृष्टा गरीर । दगने म भावपक ।

तीस-वत्तीस के बीच की उम्र । चेहरे में भोलापन टपकता पर उसकी तेज आत्मा को निरंतर दबत रहने से लगता, यह स्त्री जसी दीगनी है वसी नहीं है । गुराई से दम्बन पर कोई भांममन सकता था कि इमक मुम्करान और हेंसन के भीतर कुछ और भी है । अपन बीबा के अनुभवों के कारण आत्मियों को समझने उनके भीतर की याह पान की उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी । आत्मिया को खिलान उह चक्का इन म उस आनंद आता था । उमने निवचरन से पूछा—

‘आजकन तू अकेला ही है क्या, बूढ़ कहा गई ?’

‘पीर गई है ।’

‘तो बन घर राटी खा पेना, मैं चलतो हूँ आ जाना भला ।’

चमनी ने खाना बनाया ना निवचरन पहुँच गया । खाने से पहल हाथ धान पट्टी ना घड़े खाली थे । कुएँ म घड़े भरे और खाने उठा । चमी न बरनन माजे चौका फेर ही रहा था कि सलित्ता ने घर म प्रवेश किया । दम्बर बाबा—

‘निवचरन ।’

चमली न खाट पर लटे-नेटे उत्तर दिया, ‘मा की सवा कर रहा है क्या ?’

‘कुछ नहीं पूछी हो, कसी तबियत है ।’

‘तेरी तबियत मराम हो गई है, इम दम्बर ।’

‘नायें तो ।’ ललिता चौंका, जमे पकड़ा गया हो ।

ललिता जा, भीतर से दरी-तकिया तो उठा सा ।’

ललिता बाजार जा रहा था, अचानक इतर लौट पड़ा । उमन दरी बिछा दी, तकिया उगा दिया । चमेली फलकर सेट गई—

अब तुम दोनों जाग्रो मैं सोऊंगी ।’

निवचरन अब दाम ता गुनाम था । सुबह-गाम आकर घर-बाहर के सब काम करता, रोटी बनाता ।

एक दिन ललिता ने आकर खा, निवचरन चमेची की धानी



सागुन से धो रहा है, और चमेली साट पर बठा रामायण पढ़ रही है ।  
 ललिता वहीं आकर साट पर बठ गया । उसकी आँखों में प्रश्न था ।  
 थोड़े दूर बाद चमेली ने शिवचरन को पान लेन भज दिया ।

‘पूछ सब क्या पूछता है ?’

‘जि का है ?’

‘क्या ?’

‘शिवचरन ।’

‘नौकर ।’

‘नौकर ?’

‘हाँ ।’

‘शौक में बलनामी है रई है लोग कहते हैं शिवचरन कूँ कर  
 पीती है ।’

‘क्या कर लिया है ?’ चमेली ने बड़बड़कर पूछा ।

‘ललिता गुस्से में भरा बठा था उसने उसी तर्ज़ी में जवाब दिया,  
 सगम, और का ।’

‘सगम धाती धाता है ?’

‘पर ति है का ?’

‘इच्छा का दास । उसकी इच्छा है मेरी सेवा करने सो कर रहा  
 है । तुम्हें क्या ज्ञान है ?’

‘माय ज्ञान कायकू हाती । ललिता ने तुम्हें जवाब दिया ।’

‘तू तो ललिता है न ?’

‘हाँ, सो तो हूँ । यहकर ललिता मुम्हाराया ।’

‘चमेली ने पर बड़ाकर टगना मसलन हुए कहा—

‘क्या दूँ हाता है कभी-कभी । तू भी मसलता धाराम फिर भी  
 गता है । यह मगसनी रही । ललिता ने दगा सो उसका हाथ हटाकर  
 गुन मगसने लगा । इसी समय शिवचरन भीतर घुसा, देखा ललिता  
 चमेली के पर मगस रहा है । चमेली ने पर हातन हुए कहा क्या